

---

# Shri Vighnaraja Stuti Devendrakrita

——  
देवेन्द्राकृता श्रीविघ्नराजस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Shri Vighnaraja Stuti Devendrakrita

File name : vighnarAjastutiHdevendrAkRRitA.itx

Category : ganesh, mudgalapurANa, stuti

Location : doc\_ganesh

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM saptamaH khaNdaH | adhyAyaH 6 | 7.6 19-32||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Shri Vighnaraja Stuti Devendrakrita

---

### देवेन्द्राकृता श्रीविघ्नराजस्तुतिः

---



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

देवेन्द्रा ऋचुः ।

नमस्ते विघ्नराजाय भक्तविघ्नविदारण ।

अभक्तेभ्यो विशेषेण विघ्नदात्रे नमो नमः ॥ १९ ॥

गणेशाय परेशाय छेरम्भाय नमो नमः ।

यतुर्बाहुधरायैव नागेशध्वजिने नमः ॥ २० ॥

अमेयायाप्रताड्याय सदा स्वानन्दवासिने ।

ब्रह्मणां पतये तुभ्यं ब्रह्मदात्रे नमो नमः ॥ २१ ॥

साङ्ख्याय बोधरूपाय पुरुषाय परात्मने ।

गणेशाय प्रकृतये त्रिगुणाय नमो नमः ॥ २२ ॥

स्रष्ट्रे पात्रे य संदर्त्रे प्रकाशरूपधारिणे ।

मोडकाय त्रिलोकस्थनाथाय ते नमो नमः ॥ २३ ॥

नानामायाप्रयालाय मायिभ्यो मायया प्रभो ।

मोडकाय विशेषेण मायिकाय नमो नमः ॥ २४ ॥

नानाभेदमयं ब्रह्म विघ्नयुक्तं न संशयः ।

तत्रानन्दयुतायैव समभावाय ते नमः ॥ २५ ॥

सर्वभेदविहीनं यद्ब्रह्मामृतमयं परम् ।

भेदहीनेन विघ्नेन युतं शास्त्रप्रमाणतः ॥ २६ ॥

भेदयुक्तं गणेशीश भेदहीनं त्वया परम् ।

सृष्टे द्रुद्धमयं नाथ तयोर्नाथाय ते नमः ॥ २७ ॥

आनन्दं परमं ब्रह्म विघ्नानां डारकं मतम् ।

दायकं तत्त्वमेवेति विघ्नराज नमोऽस्तु ते ॥ २८ ॥

तं विघ्नराजराजं तु पश्यामश्चर्मयक्षुषा ।

धन्या वयं गणेशीश तव पादस्य दर्शनात् ॥ २९ ॥

अवेवमुक्त्वा प्रणोमुस्ते देवाः शम्भुपुरोगमाः ।

स तानुवाच विघ्नेशो भक्त्या स्तोत्रेण यन्त्रितः ॥ ३० ॥

(इलश्रुतिः)

श्रीविघ्नराज उवाच ।

वरान् ब्रूत मडादेवा येषां यान् मनसीप्सितान् ।

दास्यामि स्तोत्रसन्तुष्टस्तपसा ध्यानशाविना ॥ ३१ ॥

भवत्कृतमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदं भवेत् ।

पठते शृण्वते देवा वाञ्छितार्थप्रदायकम् ॥ ३२ ॥

एति देवेन्द्राकृता श्रीविघ्नराजस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ मुद्रलपुराणं सप्तमः भाऽः । अध्यायः ६ । ७.६ १८-३२ ॥

- .. mudgalapurANaM saptamaH khaNDaH . adhyAyaH 6 . 7.6 19-32..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

—  
*Shri Vighnaraja Stuti Devendrakrita*  
pdf was typeset on June 5, 2024  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

